HIGHLIGHTS OF FOUNDATION DAY SYMPOSIUM ON FRONTIERS & APPLICATION OF BIOTECHNOLOGY
ON 29TH JUNE 2010 AT C.S.R.D., PEOPLE'S GROUP BHOPAL (M.P.)

भोपाल, शनिवार 19 जून 2010 | पीपुल्स समाचार | 19

फाउंडेशन डे नेशनल सिम्पोजियम का आयोजन 29 जून को

यंग रिपोर्टर

- पीपुल्स ग्रुप के आयोजन में होगा राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिकों का व्याख्यान
- 'इलेक्ट्रॉनिक-सोवेनियर' के विमोचन होगा

पीपुल्स ग्रुप के वैज्ञानिक अनुसंधान एवं विकास केन्द्र (सीएसआरडी) द्वारा 'फाउंडेशन डे सिम्पोजियम ऑन फ्रन्टियर्स एण्ड एप्लिकेशन ऑफ बायोटेक्नॉलाजी' का आयोजन 29 जून को किया जाएगा। कार्यक्रम के विशेष अतिथि तकनीकी शिक्षा प्रशिक्षण एवं उच्च-शिक्षा मंत्री लक्ष्मीकांत शर्मा रहेंगे। राष्ट्रीय स्तर के इस कार्यक्रम के मुख्य संरक्षक पीपुल्स ग्रुप के चेयरमैन व संरक्षक सुरेश एन विजयवर्गीय, पीपुल्स समचार की सीईओ केप्टन रूचि विजयवर्गीय एवं संयोजक सीएसआरडी के डायरेक्टर प्रो. एसएस सन्धू रहेंगे।

इसमें राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक अपने व्याख्यान प्रस्तुत करेंगे। जिसमें वेलकम ट्रस्ट यूके के डॉ. एसके मुखर्जी, आईआईटी चेन्नई के डॉ. आरएस वर्मा, एन्जाइम इंडिया नासिक के डॉ. अनिल गुप्ता, आईआईटी रूड़की के डॉ. एनसी मिश्रा, सीरम इंस्टीट्यूट पुणे के डॉ. एच मालवीय एवं आईएनएमएएस दिल्ली के डॉ. एस. चान्दना प्रमुख हैं। पोस्टर-प्रस्तुति के लिए विभिन्न संस्थानों के लगभग 150 से 200 विद्यार्थी एवं शोधार्थी इस कार्यक्रम में शामिल होंगे। विजेताओं को संस्थान द्वारा 'युवा-वैज्ञानिक पुरस्कार' प्रदान किया जाएगा।

पर्यावरण बचाने एवं वृक्ष-क्षरण को रोकने के लिए संस्थान ने 'इलेक्ट्रॉनिक-सोवेनियर' के विमोचन का निर्णय लिया है। इसी कार्यक्रम में प्रो. एस. एस. सन्धू द्वारा लिखित पुस्तक 'रिकॉम्बीनेन्ट डी.एन.ए. टेक्नॉलॉजी' जो कि विश्वविख्यात प्रकाशक आईके इन्टरनेशनल द्वारा प्रकाशित है का विमोचन किया जाएगा।

सीएसआरडी को हुए दो साल

वैज्ञानिक अनुसंधान एवं विकास केन्द्र एक अत्याधुनिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण का केन्द्र है जिसका उद्घाटन राष्ट्रपति प्रतिभा देवीसिंह पाटिल ने 29 जून 2008 को किया था। केन्द्र की स्थापना आधुनिक अनुसंधान का चिकित्सा विज्ञान में उपयोग की संकल्पना एवं कार्यान्वयन हेतु की गई। इसीलिए, सीएसआरडी, पीपुल्स ग्रुप के योग्य वैज्ञानिकों का वृहद अनुभव एवं अनुसंधान-कौशल का उपयोग आवश्यक स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए नवीन तकनीक के विकास, शिक्षा एवं जन-प्रशिक्षण में किया जा रहा है। यह मानवकल्याण की दिशा में अग्रसर है।

दवाओं के लिए अंतरराष्ट्रीय बाजार

नेशनल सीरम इंस्टीट्यूट के वरिष्ठ वैज्ञानिक प्रो. हितेश मालवीय ने पालिसेकेराइड कंजेक्टेड वैक्सिन के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि भारतीय दवाओं को अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिल रही रही है, इसलिए बाजार और बड़ा हो रहा है। हम सुपर पावर बनने की राह में है और हमें अब कैरेक्टर की जरूरत है जिससे इस सफलता को संभाला जा सके। श्री मालवीय ने नए वैज्ञानिकों को बताया कि शासन अच्छी रिसर्च और प्रोजेक्ट को पूरा करने के लिए आर्थिक सहायता उपलब्ध करती है। इस क्षेत्र में अपार संभावनाएं हैं और अवसरों की कोई कमी नहीं है। नेशनल सीरम इंस्टीट्यूट के बारे में जानकारी देते हुए श्री मालवीय ने बताया कि हमारे यहां बनाई जा रही कई वैक्सिन के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन में भी इंतजार किया जाता है।

प्रो. हितेश मालवीय

डॉ. राम शंकरन

अच्छे इन्फ्रास्ट्रक्चर की दरकार...

आईआईटी चैन्नई के डॉ. राम शंकरन के अनुसार भारत में टैलेंट की कमी नहीं है। यहां के बड़े वैज्ञानिक देश के बाहर भी बेहतर काम कर रहे हैं, लेकिन हमें रिसर्च के लिए आधुनिक इन्फ्रास्ट्रक्चर की दरकार है। कई सालों से शासन रिसर्च कार्यों के लिए खासा बजट दे रही है, लेकिन अभी भी इस इन्फ्रास्ट्रक्टचर को डेवलप होने में कुछ समय लगेगा। पूरी दुनिया में 20 फीसदी वैज्ञानिक भारत के हैं जो महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट्स पर काम कर रहे हैं। हालांकि हमारे एजूकेशन सिस्टम के कारण भी ब्रेन ड्रेन की परेशानी का समाना करना पड़ता है।

क्लीनिकल ट्रायल में रखें खयाल

डॉ. एसके मुखर्जी

वेलकम ट्रस्ट यूके के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एसके मुखर्जी मानते हैं कि शोध कार्यों को और अधिक विश्वसनीय बनाने के लिए वैज्ञानिकों को खासकर क्लीनिकल ट्रायल के सभी नियमों का पालन करना चाहिए। अब जैव तकनीकी का बाजार बढ़ रहा है। लोगों की जान बचाने के लिए बनाई जाने वाली नई दवाओं को बाजार में उतारना आवश्यकता बन गई है। ऐसे में उनकी प्रमाणिकता ही तकनीकी पर लोगों का भरोसा कायम रख सकेगी। विश्व में देश की स्थिति के बारे में श्री मुखर्जी ने बताया कि भारत के वैज्ञानिकों को यूएस, यूके और अन्य देशों में भी प्राथमिकता दी जाती है। इसलिए यहां के युवाओं के लिए अवसरों की कमी नहीं है। वे अपने देश में रहकर भी विभिन्न प्रोजेक्ट पर शोध कार्य कर सकते हैं।

यंग रिपोर्टर

सीएसआरडी भानपुर में आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता तकनीकी और उच्चशिक्षा मंत्री लक्ष्मीकांत शर्मा ने की। उन्होंने पीपुल्स समूह की पहल को सराहा और प्रदेश स्तर पर बॉयोटेक्नोलॉजी और विज्ञान के छात्रों के लिए अधिक अवसर उपलब्ध कराने का अश्वासन दिया। इस अवसर पर वेलकम ट्रस्ट यूके के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एसके मुखर्जी ने बताया कि भारत की उपलब्धताएं विश्व स्तर पर पहचानी जा रही हैं। इसका उदाहरण है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा मान्य और दुनिया के हर तीसरे बच्चे को दी जाने वाली वैक्सिन भारत सीरम इंस्टीट्यूट पुणे में बनाई गई है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि और प्रायवेट यूनिवर्सिटी रेग्यूलेट्री कमीशन के चेयरमैन प्रो. एके पांडे ने इस अवसर पर विज्ञान में छात्रों की रुचि कम होने पर चिंता जाहिर की और बताया कि इस क्षेत्र में भारी अवसर हैं। श्री पांडे ने कहा कि वर्तमान में दुनियाभर में भारत एंजाइम बनाने में नंबर एक पर है, वहीं अधिकतम जैवविविधता होने के कारण भविष्य में रिसर्च कार्यों के लिए अधिक अवसर भी हैं। पीपुल्स ग्रुप की डायरेक्टर (एचआर और आईटी) कैप्टन रुचि विजयवर्गीय ने सीएसआरडी के उद्देश्यों की जानकारी देते हुए बताया कि विज्ञान और तकनीकी में नई पीढ़ी को आगे लाना हमारा लक्ष्य है। इस अवसर पर सीएसआरडी के डॉयरेक्टर प्रो. एसएस सिद्धु की 'रिकांबिनेट डीएनए टेक्नोलॉजी' किताब का विमोचन भी किया गया। श्री सिद्धु ने बताया कि मप्र में निजी तौर पर पीपुल्स ग्रुप तकनीकी क्षेत्र में बेहतर कार्य के लिए प्रतिबद्ध है। यहां पांच अतंरराष्ट्रीय स्तर की प्रयोगशाला है जिनमें प्रतिरक्षा, अनुवांशिकी, स्टेम सेल सहित कई अन्य तकनीकों पर रिसर्च कार्य जारी है। कार्यक्रम में पीपुल्स ग्रुप के मैनेजिंग डायरेक्टर श्री रामविलास विजयवर्गीय डायरेक्टर एडमिनिस्ट्रेशन अंबरीश शर्मा और डायरेक्टर मेघा विजयवर्गीय भी उपस्थित थी।

तकनीकी-विज्ञान के क्षेत्र में भारत आगे

280 बायोटेक्नोलॉजी कंपनियां देश में, 200 दवाएं जो भारत ओरिजन की हैं, 13 ऐसे वैक्सिन है जो भारत में बनाए गए और विश्व में उनका उपयोग हो रहा है, 3 बिलियन डॉलर क दवाओं का बाजार है भारत, यह आंकड़े देश की विज्ञान और तकनीकी में सशक्त समृद्धता दर्शा रहे हैं। पीपुल्स समूह के सेंटर फॉर साईस रिसर्च एंड डेवलपमेंट (सीएसआरडी) के दू फाउंडेशन डे पर आयोजित नेशनल सिंपोजियम में शामिल हुए देश और विदेशों में भी कार्य कर रहे भारतीय वैज्ञानिकों का भी मानना है कि वर्तमान में हम तकनीकी के क्षेत्र में जहां प हैं, वह एक बड़ा मुकाम है। विशेषज्ञों के अनुसार हम आर्थिक रूप से ही नहीं बल्कि तकनीकी रूप से भी दुनिया में महाशक्ति बनने के लिए तैयार हैं।